अध्ययन सामग्री ! -

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातकोत्तर

सेमेस्टर - IV

पत्र - XIV

सुमन कुमारी

सहायक प्रोफेसर

हिन्दी विभाग

एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

'लेटी' भाग - II

विद्वानों का मानना है कि अनेक परिवर्तनों से गुजरने पर भी प्लेटो का यह सिद्धांत आज भी जीवित है जीवित होने का प्रमाण यह है कि इस सिद्धान्त की अभिगुंज शेक्सपीयर और और आडन तक में सुनायी देती है। दूसरी बात यह है कि प्लेटो ने 'रिपब्लिक' के दसवें ~~अध्याय~~ अध्याय में जिस रूप में काव्य की चर्चा की है वह 'यूनान' की काव्य चर्चा से काफी भिन्न है। 'इयान' में तो प्लेटो कविता की दैवीय प्रेरणा पर व्याख्या करते हुए कवि को एकदम झूठा असत्य-भाषी तक कह देते हैं। मूल बात है कि अपने काव्य चिंतन में प्लेटो नैतिक मूल्यों की ओर बढ़ते चले गये और उन्होंने कवि के नैतिक ~~जिम्मेदारी~~ जिम्मेदारी के प्रश्न पर ही गंभीरता से विचार किया। 'रिपब्लिक' के विचारों में कवि की नैतिक दायित्वों

की चिन्ता प्रधान रूप से व्यक्त है विद्वानों का मानना है कि यह कवि एवं दार्शनिक के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध विषयक चिंता का परिणाम है।

प्लेटो के संपूर्ण चिंतन का आधार है नैतिकता एवं आदर्श राज्य का निर्माण। उनके कला संबंधी सभी विचार आदर्श नागरिक के निर्माण के चिंता के संदर्भों को ही व्यक्त करते हैं। ललित कलाओं का प्रसंग आने पर कभी-कभार प्लेटो व्यक्तित्व निर्माण के लिए संगीत की आवश्यकता स्वीकार करते हैं, किन्तु इस तरह का विचार उनके चिंतन का केन्द्रीय मुद्दा नहीं है। कला के संदर्भ में 'माईमेसिस' (Mimesis) अनुकरण शब्द का प्रयोग उन्होंने परम्परा सिद्ध मानकर प्रश्न को यह रूप दिया कि अनुकरण का विषय क्या और कला के अनुकरणीय क्या है प्लेटो ने 'अनुकरण' शब्द का प्रयोग संदर्भों में किया है -

1) विचार जगत और गोचर जगत के सम्बन्ध के व्याख्या के लिए। और

2) वास्तविक जगत और कला जगत के बीच संबंध निरूपण के लिए।

~~विद्वानों~~ विद्वान मानते हैं कि पहले का सम्बन्ध तत्व मीमांसा से है एवं दूसरे का संबंध नैतिकता से संबंधित प्रश्नों से कला का प्रश्न नैतिक परिधि में आता है. कला चिंतन के इतिहास में

प्लेटो को नैतिकतावादी मानने के मुख्य में यही धारणा सक्रिय रही है।

काव्य सत्य और अनुकरण :- प्लेटो के लिए काव्य के संदर्भ में सत्य का प्रश्न ही आवश्यक है। काव्य में सत्य का अनुकरण नहीं किया जा सकता। उदाहरण के तौर पर, बच्चों को सुनायी जाने वाली कहानियाँ प्रायः कल्पित एवं असत्य होती हैं। मूल चुनाव यहाँ सत्य-असत्य का नहीं है, अच्छे झूठ और बुरे झूठ का है। जिस प्रकार प्लेटो की बहस अनुकरण से नहीं, अनुकरण के विषय से रही है। भारत में भी अनेक पुराण कथाएँ ऐसी जिनको लेकर प्रश्न सत्य-असत्य का नहीं है हम केवल इस तथ्य की ओर आकृष्ट होते हैं कि उसमें कल्पना की सृजनात्मकता किस हद तक उपयोग हुआ है। प्लेटो का स्पष्ट मत है कि काव्य में ऐसे विषयों की चर्चा होनी चाहिए जो सत्यमूल्य पर आधारित हैं। विवेकहीन, अपरिपक्व, असंगत, अनैतिक, मन पर दुष्प्रभाव डालने वाले साहित्य का पूर्णतया निषेध होना चाहिए चाहे वह सत्य ही क्यों न हो। उनका स्पष्ट मत है कि साहित्य नैतिक संस्कारों के निर्माण का साधन होना चाहिए। यदि कवि लोक मंगल कार्यों के विचारों अनुकरण यानी ऐसी कविता

DATE / /

की चिन्ता प्रधान रूप से व्यक्त है विद्वानों का मानना है कि यह कवि एवं दार्शनिक के बीच द्वन्द्वात्मक संबंध विषयक चिंता का परिणाम है।

Scanned with CamScanner